अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

ई-संस्करण

वर्ष : 4, अंक : 5

सितम्बर 2026

जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि

वर्ष : 4 अंक : 5

सितम्बर 2026

संपादक
संचय जैन

सह संपादक
मोहन मंगलम

संयोजक समाचार
पंकज दुधोड़िया

चित्रांकन
मनोज त्रिवेदी

पेज सेटिंग
मनीष सोनी

ई-संस्करण
विवेक अग्रवाल

आचार्य तुलसी युग संत थे, आचार्यश्री के तप:जन्य प्रयोगों, प्रयासों, सिद्धांतों से स्वयं जैन समाज के भीतर और संपूर्ण देश में नयी आध्यात्मिक शक्ति पैदा हुई। उन्होंने अणुव्रत सिद्धांत को वैज्ञानिक अवधारणा देकर जैन संप्रदाय को नये ढंग से प्रेरित एवं पुनर्गठित किया, साथ ही देश में एक आध्यात्मिक ऊर्जा पैदा की, जिससे राष्ट्र के नागरिक चरित्र बल से भर उठें।

स्वामी रामदेव
योग गुरु

अध्यक्ष : **प्रतापसिंह दुगड़**
महामंत्री : **मनोज सिंघवी**
कोषाध्यक्ष : **राकेश बरड़िया**

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 2
दूरभाष : 011-23233345
मोबाइल : 9116634512

www.anuvibha.org
anuvrat.patrika@anuvibha.org

संपादकीय

भावी अनुशास्ता का अणुव्रत अभिनंदन

आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन व्यक्ति निर्माण से समाज निर्माण की अपनी रचनात्मक मुहिम के 77 वर्ष पूर्ण कर चुका है। मानव समाज को अहिंसक और शांतिपूर्ण सहअस्तित्व का मार्ग दिखाने में अणुव्रत दर्शन की एक विशिष्ट व सकारात्मक भूमिका रही है। आचार्य श्री तुलसी के बाद आचार्य श्री महाप्रज्ञ और वर्तमान में आचार्य श्री महाश्रमण के रूप में अणुव्रत आंदोलन को उत्कृष्ट आध्यात्मिक नेतृत्व प्राप्त हुआ है, हो रहा है। इस ऊर्जस्वी आध्यात्मिक नेतृत्व परंपरा का ही सुपरिणाम है कि लगभग 8 दशक के सुदीर्घ काल के बाद भी यह आंदोलन गतिशील है, प्रभावशील है और भविष्य की स्वर्णिम संभावनाओं से पूरित है।

27 जुलाई को लाडनूं में आचार्य श्री महाश्रमणजी ने युवाचार्य के रूप में मुख्यमुनि श्री महावीर के नाम की घोषणा कर सहज ही में अणुव्रत आंदोलन को भी भावी अनुशास्ता की सौगात दे दी है। यह निश्चय ही शुभ भविष्य का द्योतक है। अणुव्रत दर्शन, अणुव्रत आंदोलन और अणुव्रत संस्थाओं के प्रति युवाचार्य श्री महावीर की विशेष रुचिशीलता और स्नेहपूर्ण आशीर्वाद अणुव्रत कार्यकर्ताओं के लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत रहा है। अणुव्रत का प्रत्येक कार्यकर्ता आपकी सन्निधि में बैठ कर ऊर्जा और उत्साह का अनुभव करता रहा है।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण और युवाचार्य श्री महावीर के मार्गदर्शन में अणुव्रत आंदोलन निरंतर नयी ऊँचाइयों को हासिल करता रहे, इसी मंगलकामना के साथ भावी अनुशास्ता का अणुव्रत अभिनंदन।

– संचय जैन
sanchay_avb@yahoo.com

जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि

■ आचार्य महाश्रमण

मनुष्य दुनिया का एक सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। उसके पास पाँच इंद्रियां हैं। वह आँख से देखता है, नाक से सूँघता है, कान से सुनता है, जिह्वा से चखता है और त्वचा से स्पर्श करता है। इनके अतिरिक्त उसके पास एक मन है जो इंद्रियों द्वारा गृहीत वस्तुओं पर चिन्तन-मनन कर सकता है। पाँचों इंद्रियों में यों तो हर इंद्रिय की अपनी उपयोगिता है, पर चक्षुरिन्द्रिय का मनुष्य के जीवन में सर्वाधिक महत्व है और सर्वाधिक उपयोग है। कहा भी जाता है कि जिसके पास आँखें नहीं होती हैं, उसके लिए संसार सूना हो जाता है। जिन व्यक्तियों के पास आँखें नहीं होती हैं, उन्हें बोलचाल की भाषा में अंधा कहा जाता है और परिष्कृत भाषा में सूरदास या प्रज्ञाचक्षु कहा जाता है।

आँख होना एक बात है और उसका उपयोग करना दूसरी बात है। जिनके पास आँखें नहीं हैं, उनके लिए उपयोग-अनुपयोग का प्रश्न ही नहीं उठता। जो चक्षुष्मान हैं, उनके लिए विचारणीय है कि वे आँखों का सम्यक् उपयोग करते हैं या दुरुपयोग करते हैं।

एक व्यक्ति संतों के दर्शन करता है, अच्छा साहित्य पढ़ता है, धार्मिक पुस्तकें पढ़ता है, अच्छे दृश्यों का अवलोकन करता है, अनिमेष प्रेक्षा करता है - यह आँखों का सदुपयोग है। आँखों का दुरुपयोग भी हो सकता है। एक व्यक्ति आँखों से किसी को बुरी दृष्टि से देखता है, खराब दृश्य देखता है, अश्लील साहित्य पढ़ता है, जीवन को पतन की ओर ले जाने वाले दृश्यों को देखता है - यह आँखों का दुरुपयोग है।

आँखें बहुत मूल्यवान हैं। विचारणीय बात यह है कि जिनको आँखें प्राप्त हैं, वे उनका यथार्थ मूल्यांकन करते हैं या नहीं?

कई बार दृष्टि प्राप्त व्यक्ति भी रंगीन चश्मा लगाकर यथार्थ का बोध नहीं कर पाता। जिस रंग का चश्मा पहन लेता है, उसे दुनिया वैसी ही दिखायी देने लगती है।

आँखों का मूल्य उनसे पूछा जाये, जिनके पास आँखें नहीं हैं। आँखहीन व्यक्ति की दुनिया बहुत छोटी होती है।

महात्मा बुद्ध के पास कुछ व्यक्ति आये और बोले –''भन्ते! हमारे गाँव में एक ऐसा व्यक्ति है जो सूर्य को नहीं मानता, प्रकाश को नहीं मानता। हम सबने उसको बहुत समझाया कि भैया! सूरज होता है, प्रकाश होता है, सुबह होती है, पर वह तो किसी भी शर्त पर यह मानने के लिए तैयार नहीं है।''

बुद्ध ने पूछा –''उसके पास आँखें हैं या नहीं?''

''भन्ते! आँखें तो नहीं हैं। वह अन्धा है।''

बुद्ध ने समाधान की भाषा में कहा–''फिर तुम मनाने की चेष्टा क्यों करते हो? उसे वैद्य के पास ले जाओ। आँखों का इलाज करा दो। आँखों का आवरण हट जाएगा, रोशनी आ जाएगी तो स्वयं ही मानने लग जाएगा।''

ऐसा ही किया गया। दृष्टि मिलते ही उस व्यक्ति ने स्वत: यथार्थ का बोध कर लिया। कई बार दृष्टि प्राप्त व्यक्ति भी रंगीन चश्मा लगाकर यथार्थ का बोध नहीं कर पाता। जिस रंग का चश्मा पहन लेता है, उसे दुनिया वैसी ही दिखायी देने लगती है। पीलिये के रोगी को प्रत्येक वस्तु में पीलापन नजर आता है। अपेक्षा है, व्यक्ति यथार्थ-दर्शन का प्रयत्न करे। जो जिस रूप में है, उसे उसी रूप में जाने। अधिक जानना भी ठीक नहीं। कम जानना भी ठीक नहीं। अधिक जानना और कम जानना दोनों ही अयथार्थ हैं। जो वस्तु जिस रूप में है, उसे उसी रूप में जानना सम्यक् ज्ञान होता है।

दृष्टि का मूल्य

किसी भी क्रिया की निष्पत्ति के पीछे दृष्टिकोण बहुत बड़ा निमित्त बनता है। बिल्ली अपने बच्चे को भी पकड़ती है और चूहे को भी पकड़ती है, पर दोनों की पकड़ में बहुत बड़ा अन्तर होता है। बच्चे के प्रति ममता का भाव है, चूहे के प्रति क्रूरता का। बच्चे को बचा लेती है। चूहों को मार देती है। अन्तर्दृष्टि का अन्तर है।

दृष्टि में अन्तर आते ही परिणाम में अन्तर आ जाता है। एक शल्य चिकित्सक भी पेट को औजार से चीरता है और एक डाकू भी पेट को छूरा भोंककर चीरता है। पेट को चीरने की क्रिया एक होने पर भी दृष्टि की समानता नहीं है। डॉक्टर की दृष्टि व्यक्ति को जीवनदान देने पर टिकी है। डाकू की दृष्टि जीवन को लूटने पर टिकी है। दृष्टि में बदलाव आते ही सब कुछ बदल जाता है।

हम विचार करें कि आदमी की दृष्टि कहाँ टिकी है – गुणों पर या बुराइयों पर? सद्गुण ग्राह्य हैं और दुर्गुण त्याज्य। सद्गुण संजोकर व्यक्ति महान बन सकता है और दुर्गुण संजोकर व्यक्ति अधम बन सकता है। अपेक्षा है महान बनने के बीजों पर दृष्टि रखते हुए उन्हें पल्लवित, पुष्पित और फलित करने की दिशा में गति हो और पतन की ओर ले जाने वाले बीजों को नष्ट करने का प्रयत्न हो। जीवन की सफलता का यह बीजमंत्र है।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण का प्रवचन सुनने के लिए वीडियो के चिह्न पर क्लिक करें...

■ आलेख ■

गुरु और शिष्य का मणिकांचन योग

■ साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा

एक बार का प्रसंग है। गुरुकुलवास में एक वृद्ध आचार्य ने अपने शिष्यों की वृहद् सभा में उद्घोषणा की – ''अब शरीर श्लथ हो रहा है, इन्द्रियों की शक्ति क्षीण हो रही है, इसलिए मैं अपने अवशिष्ट समय को ब्रह्मोपासना और आत्मसाधना में नियोजित करना चाहता हूँ।''

शिष्यों ने विनम्रतापूर्वक निवेदन किया – ''गुरुदेव! आपकी भावना प्रशस्य है। आप अपनी आत्मोपासना में लगें, हमारी मंगल कामना है, पर अपनी योजना को क्रियान्वित करने से पूर्व आप अग्रिम व्यवस्था के लिए नये कुलपति की नियुक्ति कर दें ताकि आप और हम सभी निश्चिंतता से साधना-पथ पर आगे बढ़ सकें।''

समयोचित आवेदन को स्वीकारते हुए आचार्यवर ने शुभ तिथि और समय की घोषणा कर दी। निर्धारित दिन और निर्धारित समय पर गुरु ने शिष्यों को अपने कक्ष में आमंत्रित किया। शिष्यों के जिज्ञासु भाव, प्रश्नायित आँखों की भाषा को पढ़ते हुए गुरु ने स्वयं ही एक प्रश्न किया – ''इस दुनिया में लोहा भी है और सोना भी है। दोनों में अधिक मूल्यवान कौन है?''

शिष्यों का स्वर गुंजायमान हुआ – ''सोना।''

''क्यों?''

''क्योंकि सोना ज्यादा कीमती होता है, महँगा होता है।''

खामोश बैठे एक शिष्य पर गुरुदृष्टि केन्द्रित हुई। फिर पूछा – ''तुम कुछ बोले नहीं!''

शिष्य बोला – ''गुरुदेव! मेरे विचार से लोहा ज्यादा मूल्यवान है।''

''कैसे?''

शिष्य – ''लोहे को यदि पारस का योग मिल जाये तो वह भी स्वर्ण में परिवर्तित हो जाता है। यह मणिकांचन योग ही भविष्य के लिए विकास की मीनारें खड़ी कर सकता है।''

वस्तुत: मूल्य वस्तु का नहीं होता, प्रत्युत वस्तु में निहित संभावना का होता है। हम क्या हैं, इससे भी अधिक अर्थवान तथ्य यह है कि हम कहाँ तक पहुँच सकते हैं? हमारी क्षमताएं कितनी हैं और कैसे विकसित हो सकती हैं? व्यवहार के धरातल पर यह अनुभव किया जाता है कि अच्छे शिल्पकार का सुयोग हो तो प्रस्तर प्रतिमा के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है। अच्छे चिकित्सक का निर्देशन मिल जाये तो रोगी स्वस्थता की अनुभूति कर सकता है। संस्कारों का संपोषण मिलने पर नटखट बालक भी अच्छा नागरिक बन सकता है तथा परिवार, समाज, राष्ट्र का कर्णधार भी बन सकता है।

मेरे सामने एक निदर्शन है किशोर महावीर। पूर्व जन्म के कृतपुण्य, घर का धार्मिक वातावरण और साध्वियों की प्रेरणा से उसके भीतर वैराग्य का अंकुर प्रस्फुटित हुआ। आत्मा के मंदिर में आस्था का दीया जला। चेतना के सरोवर में अध्यात्म का कमल खिला। आत्मविश्वास के दर्पण में अपना प्रतिबिम्ब देखने के लिए वह उत्कंठित हो गया। फलत: उसके कदम आगे बढ़े और वह परमपूज्य

आचार्य श्री महाप्रज्ञ के पवित्र प्रभावलय में पहुँच गया। उन्होंने आपको युवाचार्य महाश्रमण के सक्षम हाथों में सौंप दिया। तब से इस लोहे को पारस का स्पर्श मिला और वह दिनोंदिन निखालिस स्वर्ण बनकर चमकने-दमकने लगा।

किसने कल्पना की थी कि जैसलमेर जिले के छोटे-से गाँव में जन्मा हुआ बच्चा एक दिन तेरापंथ धर्मसंघ के सर्वोच्च आसन पर आसीन होगा। तलहटी से शिखर तक का सफरनामा तय कर लेगा। मेरी दृष्टि में मंजिल तक पहुँचने के लिए तीन पड़ावों या तीन घटकों की आवश्यकता होती है - 1. भाग्य 2. पुरुषार्थ और 3. गुरु का आशीर्वाद।

लेख भाग्य लिपि का

चेतना के ऊर्ध्वारोहण में भाग्य की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भाग्य प्रबल हो तो विकास की अनगिनत दिशाएं उद्घाटित हो सकती हैं। संस्कृत में एक सूक्त प्रयुक्त किया जाता है - **अनुकूले सदा दैवे क्रियाल्पा सुफला भवेत्** अर्थात् दैव (भाग्य) के अनुकूल होने पर अल्प प्रयास भी विशेष फलदायी बन जाता है। ज्योतिष विद्या के अनुसार कुंडली में सब ग्रह अच्छे हैं, किंतु भाग्यरेखा प्रवर नहीं है तो वह व्यक्ति अपने जीवन में बहुत कुछ कर नहीं पाता और बहुत कुछ बन नहीं पाता।

परम सौभाग्यशाली हैं श्रद्धेय युवाचार्य श्री महावीर कुमारजी, जिन्हें साधना के शिलोच्चय पुरुष आचार्य श्री महाप्रज्ञ का वरदहस्त प्राप्त हुआ और उनकी भाग्यलिपि को सुंदर और सुघड़ बनाने के लिए वीतराग कल्प आचार्य श्री महाश्रमण की अनवरत छत्रछाया मिली। आचार्य द्वय के मंगल उपपात में रहते हुए तथा अपने पौरुष के श्रम-सीकरों से यह सत्यापित भी कर दिया है कि सुबह का बोया हुआ बीज रात तक पेड़ बन सकता है।

प्रवाह पुरुषार्थ का

जिंदगी में बहुमंजिली इमारत की छत से सूर्योदय का

मनभावन दृश्य देखने और शरद पूर्णिमा के सुधाकर की धवल रश्मियों से अभिस्नात होने के लिए आवश्यक है सत्पुरुषार्थ। अथर्ववेद की एक ऋचा है – **'रुहो रुरोह रोहित:'** यानी वही व्यक्ति उन्नति के पथ पर आगे बढ़ सकता है जो प्रयत्नशील होता है, पराक्रमी होता है। काल्विन कूलिज ने इस संदर्भ में बहुत सटीक और मार्मिक लिखा है – ''सतत पुरुषार्थ का स्थान न मेधा ले सकती है, न प्रतिभा और न ही शिक्षा। संसार में ऐसे अगणित मेधावी, प्रतिभा संपन्न तथा शिक्षित व्यक्ति हैं जो जीवन में विफलता के जंगल में भटक रहे हैं, परन्तु एक भी आदमी ऐसा नहीं होगा, जिसने सतत परिश्रम किया हो और वह असफल रह गया हो।'' देखा है युवाचार्य महावीरकुमारजी के भीतर पुरुषार्थ का झरना सदैव प्रवहमान रहा है। बचपन से ही आपने ज्ञानार्जन और सेवाकार्य में अपने समय, शक्ति, श्रम का नियोजन किया। इस दीप की लौ को कभी मंद भी नहीं होने दिया। यह विशेष बात है।

प्रसंग आचार्य श्री महाप्रज्ञ के सन् 2005 के दिल्ली प्रवास का है। एक दिन मध्याह्न के समय साध्वी सुमतिप्रभाजी युवाचार्य श्री महाश्रमण की उपासना कर रही थीं। युवाचार्यश्री ने पार्श्वस्थ मुनि महावीरकुमारजी की ओर संकेत करते हुए फरमाया–''इसने लगभग उत्तराध्ययन कंठस्थ कर लिया है। मैंने इसे कार्तिक मास तक 33 अध्ययन और मर्यादा महोत्सव तक परिसंपन्न करने के लिए कहा है। हमारे संतों में तो बहुत कम संत होंगे, जिन्होंने इस आगम को पूरा किया हो। शायद साध्वियों में भी कम ही होंगी। इसने एक बड़ी संपत्ति अर्जित कर ली है। अब कभी भी, कहीं भी कुछ बोलना हो तो यह आराम से इसका उपयोग कर सकता है। इसने मात्र मेरे कहने से यह सीखा है। इसके दो ही काम हैं – सीखना और हमारी सेवा करना। यह हमारे साथ झाबुआ की यात्रा में गया। कितना ही विहार करा लो, कितना ही काम करा लो, पर यह थकता नहीं है, अघाता नहीं है। एक व्यक्ति काम भी करता

है, सीखना-चितारना भी करता है, सेवा भी करता है और सारे कार्य बड़े शांत भाव से करता है। यह बात करना तो जैसे जानता ही नहीं है। एक व्यक्ति में इतनी विशेषताओं का होना मुश्किल है।''

वस्तुत: युवाचार्यवर का जीवन आयारो के इस सूक्त **अण्णहा णं पासओ** का सटीक अनुवाद है। प्रस्तुत प्रसंग से यह भी ध्वनित होता है कि Future bright उसी का होता है जो sees differently, speaks differently and acts differently.

ऐसा लगता है कि युवाचार्यप्रवर बचपन से ही श्रमशील रहे हैं। वर्तमान में भी आप अपने श्रम और शक्ति का नियोजन विभिन्न क्षेत्रों में कर रहे हैं। परम पावन आचार्यवर के निर्देशों का पालन करने के लिए मनसा-वाचा-कर्मणा जागरूक रहते हैं। अपनी ज्ञानाराधना और आत्मसाधना में संलग्न रहते हुए भी सघन साधना शिविर में प्रविष्ट बच्चों को वीतराग पथ पर बढ़ने के लिए अभिप्रेरित करते रहते हैं। वैरागियों के वैराग्य भाव को वृद्धिंगत करना और उनकी सम्यक् सार-संभाल करना भी आपका कार्यक्षेत्र है। इन विविध आयामों की संपूर्ति के लिए अपने श्रम-सीकरों से आप मुक्ताफलों की फसलें उगाने में सतर्क हैं।

सुखद साया गुरु का

व्यक्ति को हिमालयी ऊँचाइयों को प्राप्त करने और सामुद्रीय गहराई में उतरने के लिए अपने आत्मबल, बुद्धिबल, मनोबल, कायबल के होने के बावजूद एक सशक्त बल की और अपेक्षा होती है और वह है गुरुबल। जिसे यह बल उपलब्ध हो जाता है, उसका जीवन कृतार्थ हो जाता है। स्वामी विवेकानंद ने ठीक कहा - ''यदि गुरु का वरदहस्त सिर पर है तो तुम विशाल समुद्र भी लांघ लोगे। बिना गुरु के देहरी पार करना भी कठिन है।''

बालमुनि महावीरकुमारजी को दीक्षित होते ही प्रज्ञापुरुष आचार्य श्री महाप्रज्ञजी की शीतल छत्रछाया मिली।

आचार्यवर आहार करने पधारते तो समुच्चय के बाल साधुओं को यदा-कदा प्रेरणा पाथेय भी प्रदान करवाते, उन्हें बात-बात में तत्त्वबोध, संबोध और प्रबोध का ग्रास भी दिलवाते रहते थे।

एक प्रसंग मेरे स्मृति-पटल पर दस्तक दे रहा है। मुनि महावीरकुमारजी को कई दिनों से ज्वर था। आचार्यवर ने पूछा-''अब स्वास्थ्य कैसा है?'' बाल मुनि ने निवेदन किया-''आज बुखार तो नहीं है पर कमजोरी ज्यादा महसूस हो रही है।''

आचार्यश्री ने पूछा-''कमजोरी क्यों? बोलो, आत्मा में कितनी शक्ति है?'' बालमुनि-''हमारी आत्मा अनंत शक्ति संपन्न है।'' आचार्यवर-''जब आत्मा में इतनी शक्ति है तो फिर कमजोरी किस बात की?''

पूज्यवर द्वारा प्रदत्त बोध को प्राप्त कर बाल मुनि के चेहरे पर मुस्कान तैरने लगी और वे आत्मना स्वस्थ बन गये, ऐसा प्रतीत हुआ। मैंने पढ़ा - न्यूयार्क के रेस्त्रां का वेलनेस मंत्र है - Be so good they can't ignore you - इतना अच्छा बनो कि वे तुम्हें अनदेखा न करें। मुझे लगता है कि आपने सद्‌भाग्य, सत् पुरुषार्थ व सद्‌गुरु के मंगल मितावग्रह में रहकर विकास के मजबूत पायदानों पर कदम रखते हुए इतना अधिक संग्रहण कर लिया कि युगप्रधान आचार्य महाश्रमणजी ने एक के बाद एक संतता के अनुकूल उत्तम उपहारों से आपकी झोली भर दी और संघ-वेदी पर प्रतिष्ठित कर दिया।

मनोनयन के इस सुमंगल अवसर पर मैं यही सुमंगल शुभाशंसा व्यक्त कर रही हूँ कि महातपस्वी महाश्रमण व महापुरुषार्थी महावीर की सुमंगल शासना और साधना से हम प्रलम्ब काल तक लाभान्वित होते रहें तथा संघ-प्रभावना में योगभूत बनते रहें, ऐसा सुमंगल आशीर्वाद आप हमें प्रदान करवाएं।

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

हमसे जुड़ने के लिए नीचे दिये गये चिह्न पर क्लिक करें

संगीत : रगों में बहती अदृश्य नदी

■ **डॉ. लोकेन्द्र सिंह कोट**, बड़नगर

जब शिशु जन्म लेता है, तब उसके कानों तक पहुँचने वाली पहली ध्वनि किसी भाषा का शब्द नहीं होती, वह माँ के हृदय की धड़कनों का संगीत होता है। शायद इसी कारण संगीत मनुष्य की रगों में रक्त की तरह बहता है। कोई मधुर धुन सुनते ही पैर अनायास थिरकने लगते हैं, मन गुनगुनाने लगता है और भीतर कहीं कोई सोया हुआ पक्षी अपने पंख फड़फड़ाने लगता है। संगीत केवल सुनायी देने वाली ध्वनि नहीं है, यह वह अनुभूति है जो शब्दों से परे जाकर आत्मा को छूती है। वह कभी मंदिर की घंटियों में गूँजता है, कभी किसी बांसुरी की तान में, कभी बारिश की बूँदों में और कभी किसी माँ की लोरी में।

सृष्टि की पहली भाषा

भारतीय दर्शन में कहा गया है कि सम्पूर्ण ब्रह्मांड का जन्म 'नाद' से हुआ। उपनिषदों में वर्णित 'ॐ' को आदिनाद माना गया है। ऋषियों ने अनुभव किया कि यह संसार ध्वनियों और कंपन का विराट जाल है। जब ऋषि ध्यान में बैठते थे तो उन्हें भीतर एक अनाहत नाद सुनायी देता था, ऐसी ध्वनि जो किसी टकराव से उत्पन्न नहीं होती। यही नाद आगे चलकर संगीत का आधार बना। इसीलिए भारतीय संगीत केवल मनोरंजन नहीं, साधना भी माना गया।

मन की थिरकन और भावों की भाषा

शब्द कभी-कभी असमर्थ हो जाते हैं। प्रेम, विरह, करुणा, भक्ति या उल्लास की कुछ अवस्थाएँ ऐसी होती हैं जिन्हें

भाषा पूरी तरह व्यक्त नहीं कर पाती। तब संगीत हमारी ओर से बोलता है। जब कोई विरह गीत सुनायी देता है तो आँखें नम हो जाती हैं। देशभक्ति गीत से रगों में ऊर्जा दौड़ने लगती है। भजन सुनते ही मन श्रद्धा से भर उठता है। यह संगीत का चमत्कार है कि वह सीधे भावनाओं के द्वार पर दस्तक देता है। मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि संगीत मस्तिष्क के अनेक भागों को एक साथ सक्रिय करता है। यही कारण है कि एक धुन वर्षों पुरानी स्मृतियों को भी जगा सकती है।

प्रकृति : सबसे बड़ी संगीतकार

यदि ध्यान से सुना जाये तो प्रकृति स्वयं सबसे बड़ी संगीतकार है। सुबह पक्षियों का कलरव, नदी का कलकल प्रवाह, हवा का वृक्षों से संवाद, समुद्र की लहरों का उतार-चढ़ाव, बादलों की गर्जना और वर्षा की रिमझिम - ये सब प्रकृति के वाद्य यंत्र हैं। भारतीय रागों का जन्म भी प्रकृति से ही हुआ। राग मेघ में वर्षा की गंध है, राग वसंत में फूलों की मुस्कान है, राग भैरव में उगते सूर्य की गंभीरता है और राग यमन में संध्या का सौम्य प्रकाश। संगीत वस्तुत: प्रकृति और मनुष्य के बीच का अदृश्य सेतु है।

ध्यान, योग और संगीत का संगम

योग परंपरा में संगीत को मन की एकाग्रता का साधन माना गया है। मंत्रोच्चार, कीर्तन, भजन और नादयोग इसी सिद्धांत पर आधारित हैं। जब व्यक्ति ध्यान में बैठकर मधुर वाद्य संगीत सुनता है तो उसकी श्वास धीमी होने लगती है। मस्तिष्क की तरंगें शांत अवस्था में प्रवेश करने लगती हैं। आधुनिक न्यूरोसाइंस इसे अल्फा और थीटा ब्रेन वेव्स की अवस्था से जोड़ती है।

डिजिटल युग में संगीत की नयी यात्रा

आज संगीत हमारी जेब में रहता है। मोबाइल फोन, स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म और कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने संगीत की दुनिया बदल दी है। लेकिन तकनीक चाहे जितनी बदल

जाये, संगीत का मूल उद्देश्य वही रहता है – मनुष्य को स्वयं से जोड़ना। एक ओर एआई नयी धुनें बना रहा है, दूसरी ओर कोई वृद्ध व्यक्ति अपने पुराने रेडियो पर लता मंगेशकर या सुमन कल्याणपुर का गीत सुनकर अतीत में लौट जाता है। यही संगीत की कालातीत शक्ति है।

मौन चिकित्सक

जब जीवन की आपाधापी थका देती है, जब मन चिंताओं से भर जाता है, जब अकेलापन भीतर घर करने लगता है, तब कोई मधुर धुन हमारे कंधे पर हाथ रखकर कहती है – ‘‘सब ठीक हो जाएगा।’’ शायद इसलिए संगीत केवल कला नहीं, जीवन का मौन चिकित्सक है। यह हमारी रगों में बहती उस अदृश्य नदी का नाम है जो जन्म से मृत्यु तक हमारे साथ चलती है – कभी लोरी बनकर, कभी भजन बनकर, कभी प्रेमगीत बनकर और कभी आत्मा की शांति बनकर।

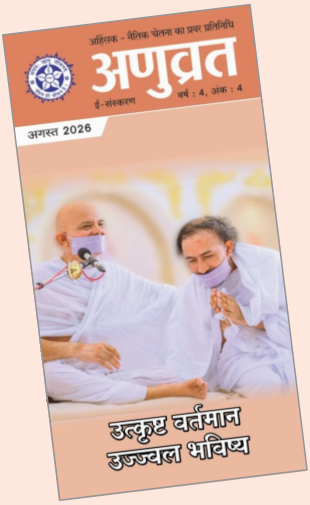

अणुव्रत विश्व भारती
की एक अभिनव पहल
अणुव्रत पत्रिका
ई–संस्करण

नि:शुल्क पत्रिका प्राप्त करने के लिए दिये गये व्हाट्सएप के चिह्न का स्पर्श कर अपना संदेश हमें भेज सकते हैं।

ई–पत्रिका नियमित भेजने के लिए आपका मोबाइल नंबर हमारी सूची में स्वचलित रूप से पंजीकृत हो जाएगा।

परोपकारी परंपरा

ताराचंद मकसाने, नवी मुंबई

आज एक फार्मा कंपनी में सुबह से ही चहल-पहल थी। सन्मित अपने पिता की मौत के बाद आज पहली बार उनकी कंपनी में आ रहा था। उसके पिता इस कंपनी में नौकरी करते थे। सन्मित के साथ उसकी माँ सरोज और छोटी बहन अलका भी थीं। कुछ ही देर में विशाल इन सभी को कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर मिस्टर कपूर से मिलवाने के लिए उनकी केबिन में ले गये। विशाल सन्मित के पापा मुरली प्रसाद के घनिष्ठ मित्र थे, उन्होंने सभी का परिचय मैनेजिंग डायरेक्टर से करवाया। मिस्टर कपूर ने सभी के लिए चाय मँगवायी। वे सन्मित के परिवार वालों से बात कर रहे थे, मगर विशाल अतीत की यादों में खो गये।

करीब 15-16 साल पहले कंपनी के ए.सी. प्लान्ट में शॉर्ट सर्किट से भयानक आग लगने से मुरली प्रसाद की मौके पर ही मौत हो गयी थी। कंपनी ने मुरली प्रसाद की ऑन ड्यूटी मौत होने पर उन्हें मुआवजा दिया था। मुआवजे की रकम तथा बीमा कंपनी से प्राप्त दावे की राशि मुरली प्रसाद के आवास ऋण चुकाने में खर्च हो गयी। मुरली प्रसाद ने अपनी मौत के सालभर पहले ही एक प्राइवेट बैंक से ऋण लिया था जिसकी एक बड़ी किस्त वह हर माह नियमित

रूप से भरते थे, पर अनहोनी को कौन टाल सकता है। मुरली प्रसाद के करीबी मित्रों ने उसकी पत्नी सरोज को मशविरा दिया कि फार्मा कंपनी और बीमा कंपनी से प्राप्त रकम से वह सबसे पहले बैंक के ऋण की पूरी एक साथ राशि चुका दें, इससे बैंक से उन्हें कुछ रियायत भी मिल सकती है, फिर हर महीने बड़ी किस्त भरने का झंझट खत्म हो जाएगा।

सरोज ने ऐसा ही किया, फार्मा कंपनी से मिलने वाली नाममात्र की अनुकम्पा राशि से वह अपने परिवार का भरण-पोषण करने लगी। मुरली प्रसाद की मौत के समय सन्मित 10 साल का और अलका 7 साल की थी। सरोज गृहिणी थी, उसने ब्यूटिशियन का कोर्स किया और एक ब्यूटी पार्लर में पार्ट टाइम नौकरी करने लगी। सीमित साधनों में इस परिवार का गुजारा हो रहा था, दोनों बच्चे भी पढ़ रहे थे।

ऐसे वक्त में मुरली प्रसाद के परिवार की आर्थिक सहायता बहुत जरूरी थी। एक दिन विशाल ने कंपनी के सभी वर्गों के कर्मचारियों की एक बैठक बुलाकर कहा था - ''साथियो, अनहोनी कभी कहकर नहीं आती है, कल को कोई दुर्घटना हमारे साथ भी हो सकती है। मैं चाहता हूं कि हम 'कर्मचारी कल्याण फंड' शुरू करें जिसमें हम अपनी 'टेक होम सैलरी' की केवल 2 प्रतिशत राशि जमा करवाएं। इस जमा राशि में से मुरली प्रसाद के परिवार के भरण-पोषण एवं उसके बच्चों की शिक्षा हेतु आवश्यक राशि बतौर ऋण प्रतिमाह प्रदान की जाये ताकि बच्चों की पढ़ाई न रुके। जब मुरली प्रसाद के बच्चे पढ़-लिखकर कमाने लग जाएं तब वे ऋण की संपूर्ण राशि ब्याज सहित 'कर्मचारी कल्याण फंड' में पुन: जमा करवा दें ताकि इस राशि का उपयोग किसी अन्य जरूरतमंद कर्मचारी के परिवार के लिए किया जा सके।''

सभी ने करतल ध्वनि से इस प्रस्ताव का समर्थन किया। कुछ ही दिनों में 'कर्मचारी कल्याण फंड' की स्थापना कर दी

गयी तथा बैंक में खाता भी खोल दिया गया। सालभर में ही इस फंड में अच्छी-खासी रकम जमा हो गयी। इस फंड से प्रतिमाह एक निश्चित राशि मुरली प्रसाद के परिवार को दी जाने लगी। कंपनी के अन्य कर्मचारी भी आर्थिक संकट होने पर 'कर्मचारी कल्याण फंड' से अपेक्षित राशि बतौर ऋण लेने लगे जिसे बाद में वे ब्याज सहित चुका देते थे। इस योजना से कंपनी के सभी कर्मचारियों को लाभ हो रहा था।

''अरे..विशाल...कहाँ खो गये हो...तुम्हारी चाय ठंडी हो रही है...जल्दी करो भाई...कार्यक्रम का समय हो रहा है।''

मैंनेजिंग डायरेक्टर की बात सुनकर विशाल अतीत से वर्तमान में लौटे। उन्होंने जल्दी से चाय हलक के नीचे उतारी और सबके साथ कॉन्फ्रेंस हॉल की ओर बढ़ गये। स्वागत की औपचारिकता के बाद विशाल ने कहा - ''साथियो, करीब 15 वर्ष पहले एक हादसे में मुरली प्रसाद की मौत हो गयी थी। तब उनका बेटा सन्मित दस साल का था और उनकी बेटी अलका सात साल की थी। 'कर्मचारी कल्याण फंड' के सहयोग से दोनों बच्चों ने अपनी पढ़ाई पूरी की। सन्मित ने जहाँ इंजीनियरिंग का क्षेत्र चुना, वहीं अलका ह्यूमैनिटीज में ग्रेजुएशन करने के बाद एमबीए कर रही है। सन्मित ने कमर कसकर पढ़ाई की और बी. ई. (मैकेनिकल) की परीक्षा में यूनिवर्सिटी में टॉप किया। उसे कैम्पस सलेक्शन में ही एक बड़ी ऑटोमोबाइल कंपनी में आकर्षक पैकेज की नौकरी मिल गयी थी। बाद में कंपनी ने ही उसे एम.एस. करने जर्मनी भेजा था। आपको यह

जानकर हर्ष होगा कि सन्मित ने दो दिन पूर्व ही 'कर्मचारी कल्याण फंड' से ली हुई राशि ब्याज सहित ऑनलाइन जमा करवा दी है। आज वह इस फंड में अपनी ओर से 10 लाख रुपये की सहयोग राशि प्रदान करने के लिए हमारे बीच उपस्थित है।''

तालियों की गड़गड़ाहट के बीच सन्मित ने 10 लाख रुपये का चेक कंपनी के एम.डी. मिस्टर कपूर को सुपुर्द किया। चेक लेने के बाद मिस्टर कपूर ने कहा-'' प्रिय साथियो, सबसे पहले तो मैं कंपनी और आप सभी की ओर से सन्मित का हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ जिसने न केवल 'कर्मचारी कल्याण फंड' से ली गयी ऋण की राशि चुकायी है अपितु फंड में अपनी ओर से बड़ी रकम जमा करवाकर आदर्श मिसाल कायम की है। अगर दुनिया में सभी परहित का प्रण ले लें तो कोई भी प्राणी दु:खी नहीं रहेगा। सन्मित और उसके परिवार को एक बार फिर से धन्यवाद देता हूँ।''

कॉन्फ्रेन्स रूम में देर तक तालियाँ बजती रहीं। बाद में विशाल ने सन्मित से कुछ बोलने का अनुरोध किया। सन्मित ने पहले तो संकोचवश कुछ कहने से मना किया, पर सभी के आग्रह पर उसने अपनी बहन अलका को बोलने के लिए कहा।

अलका ने कहा-''इस कंपनी ने और यहाँ के कर्मचारियों ने हमारे परिवार की जो सहायता की है, उसे हमारा परिवार जिंदगीभर नहीं भूलेगा। मैं चाहती हूँ कि परोपकार की यह शालीन परम्परा अनवरत जारी रहे। मैं पुन: कंपनी और इसके सभी कर्मचारियों का अंत:करण से आभार प्रकट करती हूँ तथा भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि जो विपदा हम पर आयी थी, वैसी विपदा और किसी पर न आये।''

इतना कहकर अलका अपनी माँ के पास आकर बैठ गयी, जो अपनी आँखों से टपकते आँसुओं को साड़ी के पल्लू से छिपाने का असफल प्रयास कर रही थीं...।

कैसी शिक्षा व्यवस्था चाहते हैं हम?

परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदु -

जो जीवन को सुकूनमयी जीवंतता दे

किसी समय हमारे देश में ऐसी शिक्षा व्यवस्था थी जिसमें सहज स्कूली कक्षाओं से जुड़कर भी बच्चे अपनी-अपनी योग्यतानुसार आगे बढ़ते हुए मंजिल पा गये। न कोई ट्यूशन, न कोई कोचिंग और न किसी तरह का प्रोटेस्ट। इसका अर्थ यह भी नहीं कि हम व्यवस्था की एक ही लीक पीटते रहें। वस्तुत: सच्ची शिक्षा अक्षर और अंक ज्ञान से बहुत ऊपर उठकर नित्य नये अनुभवों को विस्तार देने का नाम है। शिक्षा का उद्देश्य है मानव-मन में संचेतना उत्पन्न कर उसे अधिगम से जोड़ना, आजीवन सीखने की राह पर आगे बढ़ाना। शिक्षा का उद्देश्य है - श्रेष्ठ चरित्रयुक्त व्यक्तित्व और समतामूलक, खुशहाल समाज की संरचना करना। जीवन का आनंद इसी सकारात्मक जीवंतता में है। श्रेष्ठ शिक्षा वही है जो संसार को जीवंत और सुकूनभरी सक्रियता से नवाज सके। - **भगवती प्रसाद गौतम**, कोटा

चरित्र का निर्माण हो

आज शिक्षा का केन्द्र ज्ञानार्जन से अधिक परीक्षा, अंक और डिग्रियाँ बन गया है। परिणामस्वरूप अनेक युवा दिशाहीन, तनावग्रस्त और भौतिक उपलब्धियों तक सीमित सोच के शिकार हो रहे हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी अनेक

युवा व्यावहारिक जीवन और रोजगार की चुनौतियों के लिए तैयार नहीं हो पाते। इसलिए शिक्षा में व्यावहारिक कौशल, वित्तीय साक्षरता और जीवन-दृष्टि का समुचित समावेश आवश्यक है, जिससे युवा आत्मनिर्भर होने के साथ-साथ समाज के प्रति उत्तरदायी भी बनें। निष्कर्षत: शिक्षा तभी सार्थक है, जब वह मनुष्य के अंत:करण को जागृत करे, उसके चरित्र का निर्माण करे और उसे विवेकपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा दे। – **डॉ. कैलाशचंद सैनी**, जयपुर

जीवन को सहज बनाये शिक्षा

परिवार एक यूनिवर्सिटी है और इसके एक-एक सदस्य उसके आचार्य हैं जहाँ आचरण से शिक्षा दी जाती है। बच्चे के मानसिक और भावात्मक विकास में माँ और पिता के व्यवहार की अमिट छाप दिखायी देती है। आज बच्चे काफी तनाव में हैं, बढ़ती चुनौतियों ने उनके संघर्ष को और भी बढ़ा दिया है। ऊपर से बदलते परिवेश की महत्वाकांक्षाएं, परिवार की उनसे अपेक्षाएं – ये सब मिलकर उनकी राहें कठिन कर रहे हैं। आवश्यकता है जीवन के सही स्वरूप को समझने की, हमारी खुशी किसमें है यह जानने की। परिवार वालों को भी चाहिए कि बच्चों के साथ कठोर न हों, अपनी बातें उन पर थोपकर उनकी मुश्किलें न बढ़ाएं, जितना हो सके जीवन को सहज बनाये रखें।

– **डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा'**, भोपाल

आत्मनिर्भर बनने का हुनर सिखाये

हमारी शिक्षा-व्यवस्था में प्रारंभ से ही तकनीकी शिक्षा शैली रही है। कृषि, कुटीर उद्योग, पाक कला, चिकित्सा, अंतरिक्ष – हर क्षेत्र में पारंगत लोगों की कमी नहीं थी। वहीं आज की शिक्षा किताबी ज्ञान तक सीमित है। युवा होने पर भी उनमें हाथ का कोई हुनर नहीं पनप पाता, वह आत्मनिर्भर नहीं बन पाता। शिक्षा व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जो बालक को आत्मनिर्भर बनाने में सहयोग करे।

उसे उसके पसंदीदा हुनर में पारंगत किया जाये। अभिभावकों को चाहिए कि वे बचपन से ही अपने बालक की मानसिकता को समझें और उसी के आधार पर उसे प्रशिक्षित होने में मदद करें। सरकार को निचले स्तर से ही शिक्षा के साथ-साथ बच्चों को ऐसा प्रशिक्षण देना होगा जिससे भविष्य में वे अपना भरण-पोषण करने में सक्षम हो जाएं।

– **सुशीला शर्मा**, जयपुर

<u>**आगामी परिचर्चा का विषय**</u>

तुलसी के सपनों का भारत

☐ आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से एक सपना देखा था। कैसा था उनके सपनों का भारत?

☐ तुलसी के सपनों का भारत बनाने में क्या हैं सबसे बड़े तीन अवरोध और क्या हैं समाधान के सूत्र?

☐ अणुव्रत के कार्यकर्ता या समर्थक के रूप में क्या है हमारा दायित्व? कितने जागरूक हैं हम अपने दायित्व के निर्वहन में?

☐ अपने जीवन को अणुव्रत से भावित करने और अपने आसपास सकारात्मकता संप्रेषित करने के लिए क्या हैं हमारे नव-वर्ष-संकल्प?

11/11 - आगामी भैया दूज, अणुव्रत दिवस के अवसर पर आइए चर्चा करते हैं इन्हीं महनीय बिंदुओं पर। आचार्य तुलसी का यह 113वाँ जन्मदिवस हमें आत्मावलोकन कर आगे बढ़ने को अवश्य प्रेरित करेगा, यह विश्वास है।

अणुवत पत्रिका के नवम्बर 2026 अंक में प्रकाशित होने वाली परिचर्चा के लिए अपने सारगर्भित व अनुभवजन्य विचार हमें अधिकतम 200 शब्दों में 10 अक्टूबर 2026 तक निम्न व्हाट्सएप के माध्यम से लिख भेजिए।

9116634512

अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी के पावन जन्म की 111 वर्षीय परिसम्पन्नता तथा उनकी मुनि दीक्षा के 100 वर्ष पूर्ण होने के साथ ही अणुव्रत पत्रिका के प्रकाशन के 71वें वर्ष में प्रवेश पर प्रकाशित 'तुलसी अणुव्रत सिंहनाद विशेषांक' (अक्टूबर-नवम्बर 2025) के संदर्भ में हमें निरंतर संवाद और सम्मतियाँ प्राप्त हो रही हैं। 'पाठक परख' के अंतर्गत आप प्रबुद्ध पाठकों के मूल्यवान विचारों से परिचित हो सकेंगे।

हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने वाला

'अणुव्रत' पत्रिका का अक्टूबर-नवंबर, 2025 अंक 'तुलसी अणुव्रत सिंहनाद विशेषांक' के रूप में प्रकाशित किया गया। 486 पृष्ठों के विस्तृत कलेवर में प्रकाशित यह विशेषांक एक सशक्त नैतिक दस्तावेज के रूप में सामने आता है। संपादक संचय जैन और सह संपादक मोहन मंगलम के कुशल संपादन में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा) द्वारा प्रकाशित यह विशेषांक अपने उद्देश्य, दृष्टि और सामग्री की व्यापकता के कारण विशेष रूप से उल्लेखनीय बन पड़ा है। अपने विषय-विन्यास और वैचारिक समृद्धि के कारण यह संग्रहणीय और पुनः पुनः अध्ययन योग्य है।

यह विशेषांक आचार्य तुलसी के जीवन-दर्शन और उनके द्वारा प्रवर्तित 'अणुव्रत' आंदोलन को केंद्र में रखकर रचा गया है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता है कि यह केवल घटनाओं का विवरण नहीं देता, बल्कि उन घटनाओं के

भीतर निहित विचार और दर्शन को भी सामने लाता है। अणुव्रत दर्शन के विविध आयामों को जिस क्रमबद्धता और विस्तार के साथ प्रस्तुत किया गया है, वह पाठक को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है।

भाषा और शैली की दृष्टि से यह विशेषांक अत्यंत सुसंस्कृत, प्रवाहमय और प्रभावोत्पादक है। आज जब समाज मूल्य-संकट के दौर से गुजर रहा है, तब यह विशेषांक यह विश्वास जगाता है कि छोटे-छोटे नैतिक संकल्पों के माध्यम से एक बेहतर और संतुलित समाज की रचना संभव है। – **डॉ. उमेशचन्द्र सिरसवारी**, दिल्ली

आत्मा की शुद्धि के अनुसंधान का उपक्रम

'तुलसी अणुव्रत सिंहनाद विशेषांक' का अध्ययन अणुव्रत दर्शन में निहित ज्ञान, धर्म, जीवनमूल्य, परम्परा, संयम, अनुशासन, त्याग और समर्पण के महासागर में डूबते-उतराते हुए आत्मा की शुद्धि के अनुसंधान का उपक्रम है। पूरे अणुव्रत आन्दोलन को 'तुलसी अणुव्रत सिंहनाद विशेषांक' में प्रस्तुत करने का श्रमसाध्य प्रयास किया गया है। सम्पादकीय 'तुलसी रचित अणुव्रत संसार' में अणुव्रत आन्दोलन की 77 वर्ष की क्रमोत्तर ऊर्ध्वगामी यात्रा को तथ्यों, स्मृतियों और संस्मरणों के माध्यम से पूरी आत्मीयता के साथ सामने लाया गया है।

'अणुव्रत' पत्रिका अणुव्रत आंदोलन को दिशा, गति और प्रोत्साहन देने के स्तर पर सत्तर वर्षों से सन्नद्ध है। पत्रिका के पहले सम्पादक देवेन्द्रकुमार कर्णावट से लेकर वर्तमान सम्पादक संचय जैन तक कुल सत्रह संपादकों के एक-एक सम्पादकीय को पढ़ना, इस तथ्य से आश्वस्त करता है कि यह पत्रिका अणुव्रत आन्दोलन को वैचारिक धार देने में सदैव अग्रणी रही है। 'तुलसी अणुव्रत सिंहनाद विशेषांक' उच्च कोटि का बन पड़ा है। ऐसी उत्कृष्ट, ऐतिहासिक और दस्तावेजी महत्व की प्रस्तुति के लिए मैं कार्यकारी टीम को बधाई देता हूँ। – **दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश'**, सुल्तानपुर

आचार्य श्री महाश्रमण ने मुख्यमुनि महावीर कुमार को युवाचार्य पद पर किया प्रतिष्ठित

लाडनूं। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य अनुशास्ता महामना भिक्षु स्वामी की जन्म त्रिशताब्दी वर्ष की सम्पन्नता के अवसर पर आषाढ़ शुक्ल त्रयोदशी 27 जुलाई को तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण ने जैन विश्व भारती परिसर की भव्य सुधर्मा सभा में चतुर्विध धर्मसंघ के सम्मुख मुख्यमुनि श्री महावीरकुमार को अपना उत्तराधिकारी घोषित करते हुए युवाचार्य के पद पर प्रतिष्ठित कर दिया।

आचार्यश्री ने युवाचार्य नियुक्ति पत्र का वाचन करते हुए कहा, ''मैं आचार्य महाश्रमण अपने सुशिष्य मुनि महावीरकुमार को अपने उत्तराधिकारी के रूप में युवाचार्य पद पर नियुक्त करता हूँ और शुभाशंसा करता हूँ कि यह अध्यात्म निष्ठा, अनुशासन, विनम्रता और कौशलपूर्ण

कार्यशैली से भिक्षु शासन की गरिमा को बढ़ाता रहे।'' इस घोषणा के साथ ही पूरा वातावरण जयघोष से गुंजायमान हो उठा। आचार्यश्री ने परंपरानुसार नवनियुक्त युवाचार्य श्री महावीर को अपने हाथों से उत्तरीय ओढ़ाते हुए कहा कि ये आचार्य श्री भिक्षु की परंपरा को आगे बढ़ाने का प्रयास करते रहें।

नवनियुक्त युवाचार्य श्री महावीर ने अपने प्रथम उद्बोधन में कहा - ''परम पूज्य आचार्य श्री तुलसी की यह जन्मधरा है, जिनका मुझे भी बाल्यकाल में दर्शन का सुअवसर प्राप्त हुआ। मेरे उपकारी आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने मेरे जीवन को नयी दिशा प्रदान की। उन्होंने मेरे विकास के लिए बहुत प्रयत्न किया। मेरे परम उपकारी आचार्य श्री महाश्रमणजी के उपकारों से मैं कभी उऋण नहीं हो सकता। बचपन से ही दीक्षा लेने के बाद मुझे आपश्री की सेवा में रहने का अवसर मिला। आपकी सेवा का अवसर प्राप्त होना मेरे जीवन की अमूल्य धरोहर है। आज मैं आपसे आशीर्वाद चाहता हूँ कि आपकी वरद छत्रछाया सुदीर्घकाल तक प्राप्त होती रहे। आप द्वारा ओढ़ायी गयी अमल-धवल चद्दर की शान को आगे बढ़ाता रहूं।'' मुख्यमुनिश्री ने अपने संसारपक्षीय माता-पिता के उपकारों का वर्णन किया तथा एक गीत का भी संगान किया।

तदुपरांत साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा ने युवाचार्यश्री की वर्धापना में कहा- ''मैं मंगलकामना करती हूँ कि आप नयी सोच के साथ, नये सृजन के साथ और समयबद्धता के साथ आगे बढ़ते रहें, परम पूज्य आचार्यप्रवर के सपनों को साकार करते रहें तथा चतुर्विध धर्मसंघ को आगे बढ़ाने में अपना योगदान देते रहें।'' साध्वीवर्याश्री सम्बुद्धयशा ने कहा कि आप परम पूज्य आचार्यप्रवर की अनुशासना में खूब विकास करते रहें और धर्मसंघ को नये-नये आयाम प्रदान करते रहें। मुनिश्री धर्मरुचि, समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञा आदि ने भी युवाचार्यश्री की वर्धापना में अपनी अभिव्यक्ति देते हुए मंगलकामना की। साध्वीवृंद और

संतवृन्द ने भी युवाचार्यश्री की वर्धापना में गीत का संगान किया।

फलते-फूलते और खूब विकास करते रहें युवाचार्य : आचार्य श्री महाश्रमण

चतुर्विध धर्मसंघ ने युवाचार्य महावीरकुमार को किया वर्धापित

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ सुधर्मा सभा में युवाचार्य वर्धापना समारोह का शुभारम्भ 30 जुलाई को हुआ। आचार्यश्री ने कहा कि युवाचार्य महावीर बचपन से ही ज्ञान के क्रम से जुड़े रहे हैं। वर्षों तक ज्ञान की आराधना से संपृक्त रहे हैं। एम.ए., पीएचडी, फिर भगवती जोड़ के स्वाध्याय में संपृक्त रहे हैं। उन्होंने मानो श्रुत की आराधना भी की है। वैसे तो उन्हें श्रेष्ठ श्रुताराधक की डिग्री भी मिली हुई है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा ने युवाचार्यश्री को वर्धापित करते हुए कहा कि आप पहले युवाचार्य हैं, जिन्हें डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त है। मैं यही मंगलकामना करती हूँ कि विनम्रता, संयमनिष्ठा, आगमनिष्ठा, अनुशासन निष्ठा वृद्धिंगत होती रहे और संघ को आगे बढ़ाते रहें। तदुपरान्त शासन गौरव साध्वीश्री राजीमती ने युवाचार्यश्री को वर्धापित किया। साध्वीवृंद ने वर्धापना में गीत का संगान

किया। समणीवृंद ने भी युवाचार्यश्री को वर्धापित करते हुए गीत का संगान किया। युवाचार्यश्री के परिवार की ओर से सुमेर कोचर ने अपनी अभिव्यक्ति दी तथा कोचर परिवार ने अपने लाल के प्रति वर्धापना में गीत का संगान किया। साध्वीश्री ऋतंभरा ने गीत का संगान किया।

जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लुंकड़, जैन विश्व भारती इंस्टीट्यूट के वाइस चांसलर बच्छराज दुगड़, अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़, अमृतवाणी के अध्यक्ष ललित दुगड़, आचार्य भिक्षु समाधि स्थल, सिरियारी के महामंत्री मर्यादा कोठारी आदि ने भी युवाचार्यश्री को वर्धापित किया।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने युवाचार्य वर्धापना समारोह के दूसरे दिन 31 जुलाई को प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि युवाचार्य महावीर की मानसिक समाधि बनी रहे, खूब सक्रियता बनी रहे। जहाँ जितनी आवश्यकता हो, अपना स्वाध्याय, व्याख्यान का अभ्यास-प्रयास होता रहे। शासन-प्रशासन के कार्यों पर दृष्टि रहे। एक युवाचार्य का उचित समय पर हो जाना भी बहुत अच्छा होता है। यह आचार्य के लिए बड़े आलम्बन की बात हो सकती है। युवाचार्य महावीर खूब स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए, समाधि बनी रहे, खूब मनोबल, विनम्रता आदि का विकास होता रहे, खूब आगे बढ़ते रहें, फलते-फूलते रहें, खूब अच्छा विकास होता रहे।

युवाचार्य श्री महावीरकुमार ने भी अपने उद्‌गार व्यक्त किये। साध्वीवर्याश्री सम्बुद्धयशा ने युवाचार्यश्री की वर्धापना में गीत का भी संगान किया। शासन गौरव साध्वीश्री कनकश्री (लाडनूं), शासन गौरव साध्वीश्री कल्पलता, शासनश्री साध्वीश्री जिनप्रभा, साध्वीश्री चरितार्थप्रभा ने अपनी अभिव्यक्ति दी। मुनिवृंद ने भी युवाचार्यश्री की वर्धापना में गीत का संगान किया। युवाचार्यश्री के संसारपक्षीय भाई लोकेश कोचर ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

‘नशामुक्त युवा फॉर विकसित भारत’ में व्यापक सहभागिता

अणुविभा के मार्गदर्शन में अणुव्रत समितियों और मंचों ने किये कार्यक्रम

राष्ट्रीय संयोजक दिनेश छाजेड़ एवं मुदित भंसाली की रिपोर्ट

भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय द्वारा ‘नशामुक्त युवा फॉर विकसित भारत’ अभियान के अंतर्गत 2 अगस्त को राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशभर के युवाओं को लाइव संबोधित करते हुए नशामुक्त जीवन अपनाने तथा राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के मार्गदर्शन एवं स्थानीय अणुव्रत समितियों एवं अणुव्रत मंचों के सहयोग से देश के 43 शहरों में आयोजित कार्यक्रमों में युवाओं, विद्यार्थियों, सामाजिक संस्थाओं, स्वयंसेवकों एवं आम नागरिकों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। इन कार्यक्रमों के माध्यम से ‘नशामुक्त युवा - विकसित भारत’ के राष्ट्रीय संकल्प को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया गया।

अणुव्रत समिति लाडनूं के तत्त्वावधान में महाप्रज्ञ प्रोग्रेसिव स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने अपने प्रेरणा पाथेय के माध्यम से युवाओं को नशामुक्ति का संकल्प दिलाते हुए नशामुक्त एवं

चरित्रवान जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान की। नशामुक्ति रैली का आयोजन जैन विश्व भारती परिसर में किया गया जिसे साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा ने मंगलपाठ सुनाकर आशीर्वाद प्रदान किया। कार्यक्रम में अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मनन कुमार का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

मुख्य अतिथि तहसीलदार कुटेन्द्र राठौड़ तथा विशिष्ट अतिथियों में अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़, परामर्शक राजेश सुराणा, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लुंकड़, योगक्षेम प्रवास व्यवस्था समिति के महामंत्री निर्मल कोटेचा, आचार्य भिक्षु समाधि स्थल के महामंत्री मर्यादा कोठारी, अणुव्रत महासमिति के पूर्व उपाध्यक्ष कैलाश सिंघी, महाप्रज्ञ प्रोग्रेसिव स्कूल की प्रिंसिपल नीलिमा सिंघी तथा अणुव्रत समिति, लाडनूं के अध्यक्ष शांतिलाल बैद शामिल रहे। कार्यक्रम का संयोजन जीवन विज्ञान प्रशिक्षक राकेश खटेड़ ने किया।

शासनश्री साध्वीश्री कंचन प्रभा व शासनश्री साध्वीश्री मंजु प्रभा के सान्निध्य में **दक्षिण मुंबई**, शासनश्री साध्वीश्री शिवमाला के सान्निध्य में **वाशी** तथा साध्वीश्री निर्वाणश्री के सान्निध्य में **चेम्बूर** में आयोजित कार्यक्रमों में साध्वीवृंद ने नशे से होने वाले नुकसान के बारे में बताया तथा नशा नहीं करने का संकल्प दिलाया। **अणुव्रत समिति दिल्ली** द्वारा अणुव्रत भवन में आयोजित कार्यक्रम में शासनश्री साध्वीश्री सुव्रता ने युवाओं को नशे से दूर रहकर चरित्र निर्माण, स्वस्थ जीवन और राष्ट्र निर्माण में योगदान देने की प्रेरणा दी।

अणुव्रत समिति हावड़ा एवं **अणुव्रत समिति कोलकाता** के संयुक्त तत्त्वावधान में हावड़ा में आयोजित कार्यक्रम में मुनिश्री जिनेश कुमार ने युवाओं को नशामुक्ति का संकल्प कराया। मुख्य अतिथि पश्चिम बंगाल सरकार के संसदीय कार्य मंत्री उमेश राय ने युवाओं से नशे से दूर रहकर स्वस्थ, जागरूक एवं विकसित भारत के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया। **अणुव्रत समिति दिनहाटा** द्वारा नशामुक्ति रैली निकाली गयी। **अणुव्रत**

समिति सरदारशहर द्वारा राजेंद्र विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में छोटे-छोटे बच्चों ने नशामुक्ति के दुष्परिणामों पर नाटिका की प्रस्तुति दी।

गुवाहाटी, विजयनगर, रतनगढ़, जयगांव, जयपुर, चेन्नई, इचलकरंजी, बालोतरा, सिलीगुड़ी, चिकमंगलूर, फरीदाबाद, पालघर, बीदासर, असाड़ा और जसोल अणुव्रत समिति तथा अणुव्रत मंच गंगापुर की ओर से भी कार्यक्रम आयोजित किये गये।

अणुव्रत समिति अहमदाबाद द्वारा 'एलीवेट - एक्सपीरियंस द रियल हाई' कार्यक्रम का आयोजन 9 अगस्त को एनसीसी हेडक्वार्टर में किया गया। नेशनल ट्रेनर विवेक संकलेचा ने एनसीसी के कैडेट्स को एलीवेट कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी और आजीवन ड्रग्स फ्री रहने का संकल्प करवाया। विशेष अतिथि कर्नल मुनीश जसरोटिया थे।

हिन्दी व अँग्रेजी की प्रसिद्ध द्विभाषी बाल पत्रिका
60 पृष्ठ... रंगीन चित्रों के साथ..

अणुविभा का मासिक प्रकाशन

बच्चों का देश
राष्ट्रीय बाल मासिक

श्रेष्ठ बाल साहित्य रचनाकारों द्वारा सृजित कहानियाँ, कविताएँ, नाटक, पहेलियाँ व ढेरों जानकारियाँ।

नियमित पत्रिका मँगवाने के लिए देखें पृष्ठ 36
नवीनतम अंक पढ़ने के लिए पुस्तक के चिह्न पर क्लिक करें..

प्रकृति के प्रहरी 2.0 के पोस्टर का विमोचन

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में पर्यावरण जागरूकता अभियान के अंतर्गत आयोजित की जा रही वीडियो प्रतियोगिता 'प्रकृति के प्रहरी 2.0' ईको इनोवेशन वीडियो प्रतियोगिता (थीम : ग्रीन इनोवेशन फॉर ए सस्टेनेबल फ्यूचर) के पोस्टर का विमोचन केंद्रीय कानून एवं न्याय मंत्री व अणुव्रत विधायक-संसदीय मंच के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुन राम मेघवाल ने किया। चूरू स्थित संयुक्त राष्ट्र मरुस्थलीकरण रोकथाम अभिसमय (UNCCD) के - Pre-COP 17 कार्यक्रम में आयोजित पोस्टर विमोचन के अवसर पर देशभर से आये अनेक वैज्ञानिकों, पर्यावरणविदों एवं विशेषज्ञों ने इस वीडियो प्रतियोगिता को पर्यावरण संरक्षण हेतु जागरूकता बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल बताया।

अणुव्रत वाटिका का उद्घाटन

सरदारशहर अणुव्रत समिति द्वारा महात्मा गांधी राजकीय माध्यमिक विद्यालय, रामनगर बास में अणुव्रत वाटिका का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर विद्यालय परिसर में पौधरोपण कर प्रकृति संरक्षण का संदेश दिया गया। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति की अध्यक्ष सुमन भंसाली, पूर्व अध्यक्ष पृथ्वी सिंह बिदावत, मंत्री उमेद सिंह राठौड़ सहित समिति के अन्य पदाधिकारी, विद्यालय के शिक्षकगण, अभिभावक एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे।

अणुविभा मुख्यालय में स्वतंत्रता दिवस मनाया

राजसमंद। अणुविभा मुख्यालय में स्वतंत्रता दिवस बड़े ही हर्ष एवं उल्लास से मनाया गया। अणुविभा उपाध्यक्ष डॉ. विमल कावड़िया, सहमंत्री जगजीवन चौरड़िया एवं पंचमंडल सदस्य गणेश कच्छारा ने ध्वजारोहण किया। तत्पश्चात् सामूहिक रूप से राष्ट्रगान का संगान किया गया। खूबीलाल श्रीमाली, सुरेन्द्रकुमार टाक, राजकुमार जोशी एवं कल्याण पगारिया ने स्वतंत्रता सेनानियों को याद करते हुए देशभक्ति गीत, कविता एवं उद्बोधन प्रस्तुत किया।

बाल साहित्य संगोष्ठी एवं पुस्तक परिचर्चा

राजसमंद। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में अणुविभा सभागार में बाल साहित्य संगोष्ठी एवं पुस्तक परिचर्चा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रकाश तातेड़ के बाल कहानी-संग्रह 'रेनबो टापू की पिकनिक' तथा पहेली-संग्रह 'बूझ सहेली मेरी पहेली' पर सार्थक परिचर्चा हुई। मुख्य वक्ता चतुर कोठारी ने बाल साहित्य की वर्तमान आवश्यकताओं और रचनाकार की भूमिका पर विचार रखे। विशिष्ट वक्ता माधव नागदा ने पुस्तकों के रचनात्मक एवं साहित्यिक पक्षों पर प्रकाश डाला। अध्यक्षता कर रहे अणुविभा के उपाध्यक्ष डॉ. विमल कावड़िया ने साहित्यकारों से अणुव्रत लेखक मंच एवं अणुव्रत बालोदय प्रकल्प से जुड़ने का आग्रह किया। लेखक प्रकाश तातेड़ ने अपनी रचना-यात्रा तथा बाल साहित्य के प्रति अपनी दृष्टि साझा की।

आचार्य श्री तुलसी

अणुव्रत आचार संहिता

1
मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूँगा।
•मैं आत्म-हत्या नहीं करूँगा।
•मैं भ्रूण-हत्या नहीं करूँगा।

2
मैं आक्रमण नहीं करूँगा।
•आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूँगा। •विश्व-शांति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयास करूँगा।

3
मैं हिंसात्मक एवं तोड़-फोड़ मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूँगा।

4
मैं मानवीय एकता में विश्वास करूँगा। •जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को ऊँच-नीच नहीं मानूँगा।
•अस्पृश्य नहीं मानूँगा।

5
मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूँगा।
•साम्प्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाऊँगा।

6
मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूँगा।
•अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुँचाऊँगा। •छलपूर्ण व्यवहार नहीं करूँगा।

7
मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूँगा।

8
मैं चुनाव के संदर्भ में अनैतिक आचरण नहीं करूँगा।

9
मैं सामाजिक रूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूँगा।

10
मैं व्यसन-मुक्त जीवन जीऊँगा। •मादक तथा नशीले पदार्थों - शराब, गांजा, चरस, हेरोइन, भांग, तम्बाकू आदि का सेवन नहीं करूँगा।

11
मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा।
•हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूँगा।
•पानी-बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूँगा।

उपरोक्त संकल्पों में से सभी या अपने भावानुसार संकल्प लेने के लिए सामने दिये गये चित्र पर क्लिक करें..

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

के गौरवशाली प्रकाशन

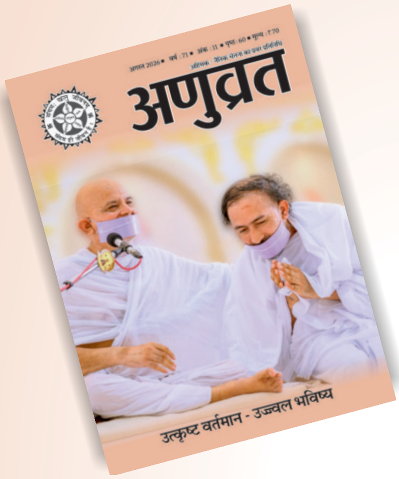

'अणुव्रत' पत्रिका

प्रकाशन के 70 वर्ष

विशेष छूट योजना

'बच्चों का देश' पत्रिका

प्रकाशन के 25 वर्ष

सदस्यता अभिवृद्धि के आकर्षक अभियान से जुड़िए

अवधि	अणुव्रत	बच्चों का देश
1 वर्ष	₹ 800	₹ 500
3 वर्ष	₹ 2200	₹ 1350
5 वर्ष	₹ 3500	₹ 2100
15 वर्ष (योगक्षेमी)	₹ 21000	₹ 15000

भुगतान के लिए QR कोड को स्कैन करें

ANUVRAT VISHVA BHARATI SOCIETY
IDBI BANK Rajsamand Branch
A/c No.: 104104000046914
IFSC Code : IBKL0000104

इस मुहिम में अणुव्रत समिति और अणुव्रत मंच के साथ–साथ रुचिशील कार्यकर्त्ता व्यक्तिगत स्तर पर भी जुड़ सकते हैं।

विशेष सदस्यता अभियान की जानकारी के लिए सम्पर्क करें

- संयोजक : विनोद बच्छावत +91 88263 28328
- कार्यालय : +91 91166 34512, 94143 43100